महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग में प्रेमचंद के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

"प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री"

31 जुलाई, 2015

31 जुलाई, 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग में प्रेमचंद के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम "प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो.चितरंजन मिश्र उपस्थित थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो.गिरीश्वर मिश्र कुलपति म.गा.अ.हि.वि. द्वारा की गयी. मंच संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की सहायक प्रो. अवंतिका शुक्ला ने किया. अपने स्वागत वक्तव्य में अधिष्ठाता संस्कृति विद्यापीठ प्रो. ए ल. कारुण्यकारा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रसिद्ध दलित कवि गुर्रम जोशवा का जीवन परिचय दिया। उन्होंने बताया कि गुर्रम जोशवा के नाम पर ही संस्कृति विद्यापीठ के सभागार का नाम गुर्रम जोशवा सभागार का उद्घाटन भी इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय द्वारा किया गया.

अपने संचालन वक्तव्य में अवंतिका शुक्ला ने प्रेमचंद के साहित्य में स्त्री का जिक्र करते हुए कहा कि प्रेमचंद को गढ़ने बनने की प्रक्रिया को समझने के लिये शिवरानी देवी द्वारा रचित पुस्तक 'प्रेमचंद घर में' बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें उनके जीवन और विचारों के विकास को नजदीकी से समझा जा सकता है. प्रेमचंद अपने साहित्य में उस समय कि सामाजिक विद्रूपताओं दहेज प्रथा, अनमेल विवाह,विधवा विवाह की आवश्यकता आदि का चित्रण बहुत ही सहज एवं क्रांतिकारी तरीके से करते थे, जिसमें स्त्री मुद्दों की क्रांतिकारी पत्रिका स्त्री दर्पण से जुड़े स्त्रीवादी लोग भी कई बार चूक जाते थे. प्रेमचंद ने गोदान की मालती और मिस पद्मा के चरित्र के माध्यम से लिव-इन रिलेशनशिप और उसके भीतर के असमानतामूलक संबंध और स्वतंत्र महिलाओं के भीतर की मानसिक दुर्बलताओं की समस्या की ओर बहुत पहले ही ध्यान आकर्षित करा दिया था, जिनसे हम आज भी रुबरू होते रहते हैं. अपने वक्तव्य में प्रो. शंभू गुप्त ने कहा कि प्रेमचंद यथार्थोन्मुख आदर्शवाद के लेखक थे। साहित्य और स्त्री विमर्श के संबंधों पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि राजेंद्र यादव ने स्त्री विमर्श को मार्ग से विमुख किया है।साहित्य में जिस तरह से स्त्री विमर्श का प्रचार किया जा रहा है, वह समस्या के सिर्फ एक पहलू के रूप में ही बात को रखता है.समस्या के व्यापक फलक को नहीं. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि जनता ने प्रेमचंद को अपना नायक यूं ही नहीं बनाया बल्कि प्रेमचंद ने अपनी रचनशीलता और रचनाधर्मिता के बदौलत जन के दुख दर्द में शामिल होकर इसे हासिल किया है। उन्होनें अपने व्याख्यान में प्रेमचंद के साहित्य के अंतर्गत गढ़े विभिन्न स्त्री पात्रों को लेकर काफी विशद चर्चा की, जिसमें विभिन्न स्त्री पात्रों जैसे कि धनिया, निर्मला, मालती, जालपा,बूढ़ी काकी आदि के माध्यम से उनके स्थान को निरूपित करने का प्रयास किया ।प्रो. मिश्र ने कहा कि किसी भी सहित्यकार पर चर्चा टुकड़ों में नहीं,बल्कि संपूर्णता में होनी चाहिये और प्रेमचंद पर भी मै टुकड़ों में नहीं संपूर्णता

में बात करूँगा। आगे उन्होंने कहा-प्रेमचंद अपने साहित्य में आने वाली हर बात व घटना के आर्थिक पक्ष का विश्लेषण जरूर कराते हैं और ऐसा करने वाले वह दुनिया के एक मात्र लेखक हैं। पात्रों व कथानक का जिक्र करते किया और कहा कि प्रेमचंद के पात्र अनपढ़ जरूर हैं लेकिन अशिक्षित नहीं। रचनात्मकता केवल लिखना भर नहीं है, प्रसव वेदना भी रचनात्मकता है। आनंद की बात करते हुए उन्होंने कहा कि जयशंकर प्रसाद के यहाँ आनंद चिंता से होकर गुजरती है जबकि प्रेमचंद के यहाँ आनंद चिमटा अर्थात श्रम से होकर गुजरता है। अपने वक्तव्य में चितरंजन मिश्रा ने प्रेमचंद के साहित्य में औद्योगिक समाज के प्रति असंवेदनशीलता पर भी प्रकाश डाला। प्रेमचंद के बारे मे बताते हुये उन्होंने कहा कि यह भारत के एकमात्र ऐसे लेखक हैं, जिन्हें समाजशास्त्र के निष्कर्षों की प्रमाणिकता के लिए उद्धरित कर सकते हैं।

बिहार से आये शिक्षक डॉ. राजनारायण पाठक ने प्रेमचंद की कफन कहानी पर प्रश्न खड़ा करते हुए कहा कि कफन कहानी की बुधिया प्रसव पीड़ा में मर गयी किंतु उसके आस पास की महिलायें उसके पास क्यों न खड़ी हुईं. प्रेमचंद किस समाज के बारे में बात कर रहे हैं, जहां स्त्रियां भी स्त्रियों के पक्ष में खड़ी नहीं हो पा रहीं हैं. अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि रचना का काम मानव स्वभाव को उकेरना है। मानव स्वभाव के उथल-पुथल को उकेरने से ही साहित्य की रचनात्मकता बनती है। हर रचनाकार अपने ढंग से मानव स्वभाव को रचता है। प्रेमचंद जिस तरह से मानव स्वभाव को अपने साहित्य में उकेरते हैं उतनी सरलता से किसी अन्य लेखक ने नहीं किया है। माननीय कुलपति महोदय ने डॉ. नारायण के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा कि यह कलेक्टिव समाज" से व्यक्तिपरक समाज बनने की ओर प्रेमचंद का एक संकेत था कि समाज कहां जा रहा है.

कार्यक्रम के अंत में प्रभारी विभागाध्यक्ष व सहायक प्रो. सुप्रिया पाठक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया और कहा कि अगर समाज को सही मायनों मे समझना है और संवेदनशील बनना है तो हमें प्रेमचंद का साहित्य पढ़ना चाहिए क्योंकि वह हमें समाज की वास्तविक छवि से रूबरू कराते हैं । उन्होंने प्रेमचंद के साहित्य मे स्त्री पर प्रकाश डालते हुये कहा कि उनकी सारी स्त्री पात्र हमें यथार्थ से परिचित कराते हैं। अपने देश की वास्तविक देशज संस्कृति से परिचय के लिए प्रेमचंद को पढना और जानना हर व्यक्ति के लिये अनिवार्य है. कार्यक्रम में अकादमिक संयोजक डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. सुरजीत कुमार सिंह एवं विभिन्न विभागों के विद्यार्थी, शोधार्थी उपस्थित थे।